मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • सलंग अंक १९७ • जून-२०२१

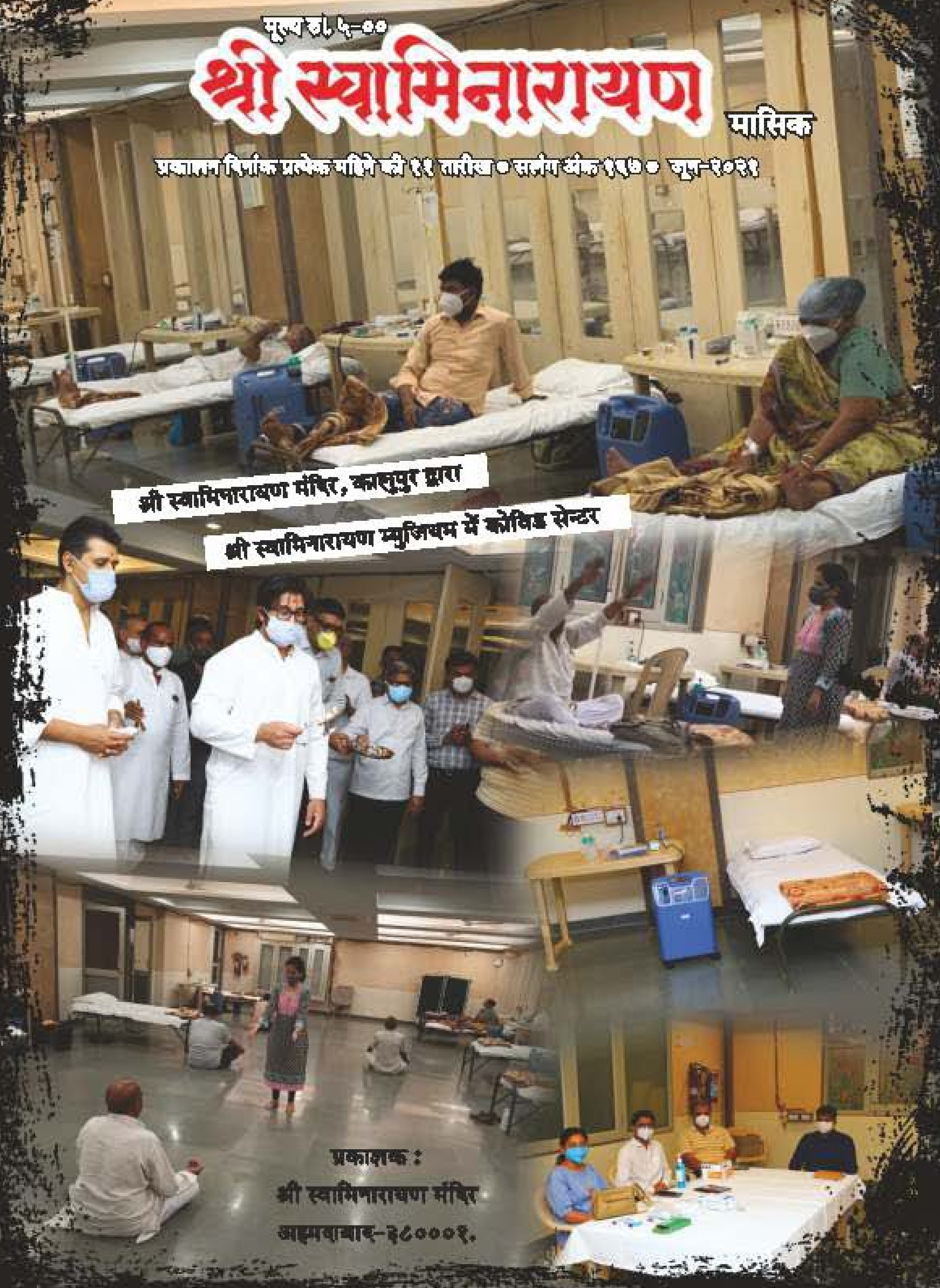

प्रकाशक :
श्री स्वामिनारायण मंदिर
अहमदाबाद-३८०००१.

कोरोना महामारी मे अक्षरवासी हुए सद्गत आत्माओ को

"श्रध्धांजलि"

पिछले कई दिनो से हमारे देश और दुनिया में, मनुष्य जाति के काल कोविड-१९ (कोरोना) के नाम से जाने वाली भयंकर महामारी में विश्व के लाखो लोग काल के ग्रास बन गये है। अनजाने कारण से उत्पन्न हुए आपत्काल में देश-दुनिया में निवास करने वाले समाज को इस समय महामारी का भय सता रहा है।

ऐसे संकटकाल में श्रीजी महाराज के शिक्षापत्री श्लोक ११९ के वचन अनुसार कष्ट देने वाला आपदा में अपनी तथा अन्य की रक्षा करने के लिये सावधानी के साथ-साथ स्वास्थ्य विभाग की सूचनाओ का पालन तथा पूजा-पाठ और होम-हवन, औप मंत्र जाप शास्त्र का अध्ययन तथा पुरःश्चरण जैसा अनुष्ठान और गरीब की मेडिकल सेवा तथा अन्य आवश्यक सेवा के कार्य श्री नरनारायणदेव पीठस्थान के तरफ से देश-विदेश के मंदिरो तथा युवक मंडलो द्वारा किया जा रहा है। इस आपत्ति काल में कोरोना महामारी से पीडित असंख्य सत्संगीयो की श्रीजी महाराज सहाय करके रक्षा किये है। फिर भी अति विपरीत संयोग में कई त्यागी-गृही, भाई-बहन देश विदेश में अक्षरनिवासी हुए है। इस कारण से उनके परिवार में और सम्प्रदाय में पूर्ण न हो सके ऐसी कमी हुई है। और ऐसे निष्ठावान सेवाभावी कार्यकर्ता की सेवा से अपना सम्प्रदाय सदैव ऋणी रहेगा।

श्रीजी महाराज की ईच्छा यही अपना प्रारब्ध।

श्रीजी महाराज उन सभी मुक्त आत्माओ को अपने सेवा में रखे। तथा दिवंगत के परिवार वालो को परिजन खोने के दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। ऐसी श्री नरनारायण भगवान के चरणोमें प्रार्थना है।

प.पू. बड़े महाराजश्री
प.पू. आचार्य महाराजश्री
प.पू. लालजी महाराजश्री
श्री नरनारायणदेव देश पीठस्थान
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर

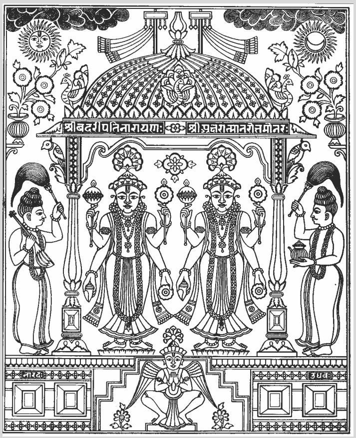

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १४ ● अंक : १६७ ● जून-२०२१

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०४

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, ०५
प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

०३. श्री नरनारायण की प्रागट्य भूमि ०६

०४. पर्व के साथ साथ १०

०५. कुंडाल ११

०६. आदि आचार्यश्री की अमिदृष्टि से अक्षरधाम ! १३

०७. पैदा हुए वहाँ से अवश्य जाने..... १६

०८. श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से १८

०९. भक्ति सुधा १९

१०. सत्संग समाचार २१

श्री स्वामिनारायण

अस्मदीयम्

हमारी मर्जी के बिना किसी की नैया पार नही होती है ।

यह सत्य सनातन परमेश्वर का सिद्धान्त है । परमेश्वर को भूलकर हम लोग करोडो उपाय करते है । फिर भी हमें कभी भी सफलता नही मिलती है । वह इस वर्तमान समय में विपरीत समय में भी यर्थात में सिद्ध हो रहा है । जो व्यक्ति भगवान के उपर विश्वास रखकर अपना सभी व्यवहार करता है । उसे जीवन में किसी प्रकार का पश्चाताप नही करना पडता है । लेकिन मनुष्य के हृदय में अहंकार इतना भर गया है कि वह समझता है कि हम ही सब कुछ कर रहे है । हमारे अलावा कोई भी हमारे परिवार का जीवन-यापन व्यवहार कौन चलायेगा । यह एक प्रकार का अहंकार होता है । जिस में से मनुष्य निकल नहीं पाता है । इस कारण उसका कोई भी कार्य पूर्ण नही होता है । क्योकि वह व्यक्ति अकेले ही यश प्राप्त करना चाहता है । यह प्रवृत्ति उसे सुख और सफलता से दूर रखती है । इस कारण से निराश होकर गलत निर्णय करके दूसरे के सिर पर दोष लगा देता है । जिससे समाज और अपनी दशा को खराब कर देता है । इस विपरीत कृत्य से परमात्मा सब की रक्षा करे । उनके अलावा किसी की सलाह काम में नही आती है । इस कारण से सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण के चरण में प्रार्थना करे कि इस विपरीत समय में सबकी रक्षा करे ।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं
प.पू. लालजी महाराजश्री के
कार्यक्रम की **रुपरेखा**

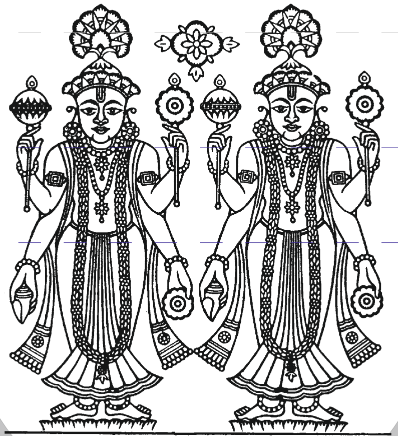

भगवान श्री नरनारायण की प्रागट्य भूमि धर्मारण्य क्षेत्र

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

एकबार धर्मराजा ने कठिन तपस्या किये । इन्द्र इत्यादि देवता कैलास पर आकर शंकर भगवान से विनय करके बोले कि धर्मात्मा धर्म राज कठिन तपस्या कर रहे है । उन्हे कोन सै पद चाहिए । जो माँगे वह तत्काल देकर तपस्या पूर्ण करे । भगवान सदाशिव देवताओ से बोले । आप लोग धर्म के प्रति भय नही रखे । वे विरक्त निष्कामी है ।ऐसा सुनकर देवता लोग शांत हुए ।

स्वर्ग के अधिपति इन्द्र देव को इसके बाद भी इन्द्र पद का भय सताने लगा । स्वर्ग की अप्सराओने कहा कि आप धर्मारण्य में जाये । और धर्मदेव के कठिन तपस्या को रोको । विध्न डालो । लालच देकर भ्रष्ट करो । इनद्र का आदेश पाकर अप्सराये देव कार्य की सिद्धि के लिये धर्मारण्य क्षेत्र में आयी । रुप, लावण्य, कला, मोह, सम्मोहन के द्वारा धर्म की तपस्या में रुकावट लाने के लिये करोडो-करोडो उपाय करने लगी । लेकिन धर्मदेव की तपस्या द्वारा किये गये पुण्य से अप्सराओ की कामना समाप्त हो गयी । और पवित्र हृदय वाली बन गई । और शुद्ध हृदय पूर्वक हाथ जोडकर प्रार्थना करने लगी । है धर्मधारी श्रेष्ठ ! आप के दर्शन मात्र से हम लोगो का मन निर्विकार हो गया है।हमको आप एक वरदान दे ।

''यह धर्मारण्य महाक्षेत्र है । यहाँ पर हमारा स्थायी निवास रहे ।इस तीर्थ में कोई भी जप-तप-होम-स्वाध्याय श्राद्ध करें तो उसे अक्षय पुण्य प्राप्त हो'' । धर्मदेव खुश होकर तथास्तु बोले ।और स्वयं तपस्या करने लगे ।

फिर एक बार धर्मराज की तपस्या से खुश होकर भगवान श्री शंकर देवी पार्वती के साथ धर्मारण्य क्षेत्र में आये ।महेश्वर को देखकर धर्मदेव खडे होकर वंदना करने लगे । चालिस नामो वाले से स्तुति करने लगे । महादेवजी खुश होकर धर्म से बोले हे धर्म ! आप की तपस्या से यह धर्मक्षेत्र ''धर्मारण्य क्षेत्र'' के नाम से प्रसिद्ध होगा ।और दो योजन क्षेत्र तक समस्त शरीर धारियों के लिये सनातन मोक्ष स्थान बनेगा ।मैं भी इस तीर्थ में मूर्ति स्वरुप रहूँगा । और अखंड निवास करुगाँ । यह कहकर महादेवजी अर्न्तध्यान हो गये ।वहाँ पर एक अद्‌भूत लिग प्रगट हुआ । उसकी धर्मदेवने स्थापना किये ।यह धर्मेश्वर नाम से प्रसिद्ध है।

धर्मराज वहाँ रहकर धर्मवाव का निर्माण किये । जिसमें स्नान-जलपान करने से पापो से मुक्ति प्राप्त होती है । जो कोई भी मनुष्य व्याधि दोष निवारण तथा क्लेश शांति के हेतु पवित्र जल का श्रद्धा से पानक रेगा वह इससे मुक्त हो जाता है। पिंडदान, तर्पण, श्राव्द्ध आदि उत्तर कर्म कराने से गर्भवास के दुःख से मुक्ति मिलती है।सिद्दियो का सिद्धि मिलती है और योगियो को मुक्ति मिलती है । पंच महापापी को पापो के कष्ट से मुक्ति देते है।धर्मारण्य क्षेत्र में एक पर्णकुटी बनाकर धर्मदेव मूर्तिनाम पर पत्नी के साथ रहने लगे । वहाँ पर ब्रह्मा, विष्णु, महेश त्रिदेवो के अंश से शुद्ध अठ्ठारह हजार ब्राह्मण तपस्या हेतु निवास किये ।

ब्रह्मवेत्ता, सदाचारी, विद्वान, पवित्र, ज्ञानी, बुद्धीशाली, कर्मठ, ब्रह्म परायण, त्रिकालदर्शी वितरागी-जितेन्द्रिय, संयमी, ऐसे अनेक गुणो से युक्त थे । १८ हजार तपस्वीयो के अधिपति धर्मराज सभी के योग क्षेत्र को वहन करते थे । धर्मारण्य की सेवा से सभी मनुष्य अहिंसक, अतिथिपूजक, और धर्मपरायण बन गये थे । त्रिकाल संध्या, गायत्री जप, तर्पण वैश्यदेव जैसे नित्यकर्म से युक्त हो गये । प्रतिदिन षोडशोपचार विधि से धर्मेश्र की बिल्व पत्र से पूजा होने लगी । यहाँ के धर्मारण्य के निवासी ऋषियो एवं महान ब्राह्मणो को मुख्य २४ गोत्र में उत्पत्ति हुई । जिसमें भारद्वाज, कौशिक, कुश, शांडिल्पगौतम, वशिष्ट, गार्ण्य, आत्रेय, परासर, कृष्णायन, सावर्णी आदि द्विज श्रेष्ठ थे ।

इन चौबीस गोत्रिय विप्रो ने गोत्र की रक्षा हेतु अपने गोत्र की अधिष्ठात्री एक-एक योगिनी की स्थापना किये । उन्हे सभी कुलदेवी के रुप में पूजा करने लगे । बाद में नरश्रेष्ठो ने अपने-अपने गोत्र की मात्रका की स्थापना किये ।जिस कारण से सभी लोग सुरक्षित हुए ।

देवो के सौ वर्ष बीत जाने के बाद के बाद एक दिन, ब्रह्मा, विष्णु, महेश का धर्मारण्य में आगमन हुआ । इस तीर्थ की पवित्रता तपस्या देखकर तत्काल कामधेनु गौमाता ने धर्मारण्य की पूर्ति के लिये प्रगट हुई। पूर्ण कार्य भी पूर्ति सिद्धि के लिये धर्मारण्य में अनेक प्रकार की मानव सृष्टि को स्थान दी ।

एक बार धर्मारण्य में दुर्गादेवी तथा गणेशजी की स्थापना देवताओने किया था ।

धर्मारण्य के उत्तर दिशा में देवराज इन्द्र ने वृत्तासुर का वध किया था ।ब्रह्म हत्या लग जाने के कारण पाप मुक्त होने के लिये एकाग्र चित्त होकर शंकर भगवान की आराधना कर रहे थे । इस कारण से शिवजी खुश होकर बोले कि हे देवराज ! धर्मारण्य क्षेत्र में मात्र प्रवेश करने पर गौहत्या-ब्रह्महत्या-स्त्री हत्या जैसे महापातक स्मरण, स्नान मात्र से मुक्ति मिल जाती है ।आपकी तपस्या से खुश होकर मैं यहाँ सदैव ईन्द्रेश्वर नाम से अखंड निवास करुँगा ।

तेत्रायुग के ब्रह्मपुराण में व्यासजी लिखते है कि लोहासुर नाम का मदोन्मत राक्षस ब्राह्मण के वेश में रहकर धर्मारण्य क्षेत्र में आया । यहाँ की समृद्धि देखकर अपना शासन स्थापित करने के लिये कई प्रकार का उपद्रव तथा कष्ट देने लगा । ब्राह्मणो के यज्ञ पात्रो तथा हवन सामग्री फेकवाने लगा ।समस्त समाज को परेशान करने लगा था । लोहासुर से प्रजा परेशानहोकर लोग अन्य जगह पर जाकर निवास करने लगे । तीर्थ क्षेत्र धर्मारण्य एक दम विरान हो गया ।लोहासुर वहाँ की स्थिति खराब कर दिया था ।ऐसा दृश्य देखकर असुर खुश होकर अपने नगर चला गया ।

इसके पश्चात धर्मारण्य तीर्थ का पुनः जीणोद्धार करने के लिये पितामह ब्रह्माजी ने अपने क्षेत्र धर्मदेव की नगरी धर्मारण्य क्षेत्र में भाद्रपक्ष सुदी द्वादशी की तिथि को स्वर्ग से सरस्वती जी को प्रगट किये ।जिस प्रकार माता के दूध से शिशु पूर्ण पोषण प्राप्त करता है । उसी प्रकार सरस्वती के जल से धर्मारण्य तीर्थ पुनः मोक्षदायी बन गया ।ब्रह्मापुत्री के आगमन से ब्रह्मपुत्र धर्मदेव अति प्रसन्न हुए । इस तीर्थ में जो कोई भी व्यक्ति आकर जप-तप-दर्शन, पूजन, सत्कर्म, श्राद्ध, तर्पण-स्नान आदि कर्म करेगा ।उसके लिये भगवान के वैकुंठ का द्वार खुला रहेगा ।

त्रेतायुग में मर्यादा पुरुषोत्तम राम भगवान सपरिवार गुरु वशिष्ठ के साथ तीर्थ यात्रा पर निकले थे । उत्तर-पूर्व भारत की तीर्थयात्रा करके पश्चिमी गामिनी नर्मदा में स्नान पूजा करके धर्मारण्य क्षेत्र में प्रवेश किये थे । उस समय श्रीहरि रथ के उत्तर कर पृथ्वी परपैदल चलने लगे थे । साथ ही साथ सैनिक परिवार भी जुड गये । श्रीरामजी सुव्रणा (वर्तमान में साबरमती) नदी के तटपर धर्मराज की कुटीर के समीप आराम किये थे । राम सैनिको को मांडलिकपुर में रहने दिये थे । रघुपति राधव राजाराम सपत्नि तीर्थक्षेत्र का दर्शन-स्नान, दान-पूजा, तर्पण, श्राद्द विधइ पूर्वक सुवर्णा के तटपर रामेशव्र तथा कामेश्वर महादेवकी स्थापना शास्त्रोक्त रुप से किये थे ।

एकबार आधी रात को श्रीराम जागरण कर रहे थे । वहाँ पर एक स्त्री की रोने की आवाज कान में आई । भगक्त वत्सल प्रभु तुरंत उस दिशा में दोडते गये । दुख से पूर्ण अबला को अभय वचन देकर रोने का कारण पूछे । उस स्त्रीने उत्तर दिया - हे परमब्रह्म - मैं धर्मारण्य क्षेत्र की अधिष्ठाती देवी हूँ । पापी दानव लोहासुर के लम्बे काल के दुष्टता के कारण यहाँ के लोग पलायन कर गये है । आप राजा के रुप में परमेश्वर है । आप अपने भय वचन से लोगो को पुनः वापस बुलाकर धर्मारण्य में पुनः स्थापित करे । आप का अवतार मानव कल्याण के लिये हुआ है । बारह वर्ष से निराधार भूमि की तीर्थापति बनकर रक्षा करें । प्रजा को पुनः स्थापित करने के लिये मेरा आग्रह है । श्रीहरि राघवेन्द्र सरकार चारो दिशाओ से ब्राह्मणो को बुलाकर धर्मारण्य में स्थापित किये । तथा तीर्थ की अधिष्ठात्री जगदम्बा जगत जननी की परम ब्रह्म ने स्थापना की थी । (यही आजकल भद्रकाली के रुप में अहमदाबद में बिराजमान है ।

धर्मारण्य में फिर से चारो वेद की ऋचाओ की ध्वनि गुजने लगी । जप, तप, स्वाहा, स्वधा, जैसे गायत्री मंत्र से तीर्थ में देवत्व प्रगट हुआ । धर्मारण्य की अधिष्ठात्री देवी की प्रार्थना से भगवान रघुपतिने धर्मवाव का जीर्णोध्धार किया गाय । तथा वहाँ पर विशाल वेद्री, यज्ञशाला, गृहशाला, गौशाला, ब्रहम शाला इत्यादि का निर्माण कराया गया । तथा असुरो द्वारा खंडित स्मारको का पुनः निर्माण करके रंग रोशन किया गाय । उस समय ब्राह्मणो को स्वर्ण रत्न से युक्त गायो का दान किया गया । तथा इस क्षेत्र की रक्षा के लिये वायुपुत्र हनुमानजी की स्थापना की गयी ।

पितामहब्रह्मा के हृदय में से प्रगट हुए . धर्मदेव की शादी दक्ष की पुत्रियो अहिंसा - मूर्ति आदितेरह पुत्रियो के साथ हुआ ता । जब-जब सृष्टि की उत्पत्ति होती है । तब-तब धर्म तत्व प्रगट होता है । इस भूमंडल पर धर्मतत्व को धारण करके पोषण - पालन - स्थिति - संवर्धन करने वाले धर्म मूर्तिमान रहता है । भूमंडल के अस्तित्व में धर्मतत्व प्रधान भूमिका होती है । धर्म अपने पत्नी रुप शक्तियों और संतान रुपी सात्विक वत्तियो के प्रभाव से सर्वजीव प्राणीमात्र इस लोक के परलोक में शांति का अनुभव होता है । धर्मज मूल स्वरुप अपने परिवार के साथ श्वेतधाम में सदैव बिरामजान रहते है । तथा दूसरे रुप में अवतार धारण करते है ।

धर्मदेव संसार के कल्याण के लिये अवतार धारण करके धर्मारण्य में तपस्या करते है । जब जब धर्म का अवतार होता है । तब-तब भगवान परब्रह्म पूर्ण पुरुषोत्तम नरनारायण रुप धारण करके युगल स्वरुप में पिता धर्म की तपस्या के कार्य में जुड जाते है । धर्मदेव के भरतखंड मे मुख्य तीन स्थानक पुराण में बताया गया है । एक हिमालय में बद्रिकाश्रम - कलाप गाँव दूसरा साबरगंगा के किनारे आने वाले धर्मारण्य क्षेत्र जिसाक विस्तृत में वर्णन स्कंध पुराण में कहा गया है तिसरा अलकनंदा देव नदी के संगम देव प्रयाग क्षेत्र में मूर्ति में निवास कहा गया है ।

धर्मदेव के तीन निवास स्थान को पुराण में बद्रिकाश्रम कहा गया है । और साबरमती नदी के किनारे आये धर्मारण्य में एक स्थान पर कल्प के प्रथम सतयुग में परब्रह्म परमेश्वर नरनारायण युगल रुप में धर्मदेव तथा मूर्ति देवी के नेत्र द्वार सोलह वर्ष के किशोर अवस्था में प्रगट होते है । माता मूर्ति देवी-पिताधर्मदेव के द्वारा नरनारायण का यज्ञोपवित संस्कार प्राप्त करके जगत कल्याण मुमुक्षुओ का सत्कर्म का पालन-पोषण बुद्धि के लिये भरत खंड के प्रजा के मोक्ष हेतु माता-पिता के साथ बदरिवन में तपस्या करने आये है ।

वर्तमान समय में भारतीय सनातन हिन्दु परम्परा के ज्योतिषचक्र की गणना के अनुसार श्वेतवाराह, कल्प चल रहा है । इस कल्प के समय में सर्व प्रथमवार स्वयभूव नाम के मन्वंतर में प्रथम सत्युग में प्रभव ना से संक्सर बदरिकाश्रम - अलकनंदा के किनारे आये कलाप नामक गाँव में पिताधर्म देव - माता मूर्ति देवी द्वारा चैत्र सुद एकादशी पुष्पनक्षत्र रविवार - ध्रुव योग में पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान नरनारायण हरि कृष्ण चार रुप धारण करके प्रगट हुए । उसमें हरिकृष्ण दोनो अवतार श्वेतद्वीप में जाकर

तपस्या करने के लिये माता-पिता की आज्ञा से पाये । तथा नर नारायण के दो स्वरुप बदरिधाम में तप करने लगे ।

इसके बाद यह वर्तमान श्वेतवाराह कल्प के चाक्षुष के नाम से मन्वंतर चल रहा है । इसके बाद पृथ्वी के उपर एक बडी दुर्घटना बनी है । एकबार दुर्वासा मुनि दीर्धकालीन अनुष्ठान किये । उसके उद्यापन के अवसर पर ऋषि, मुनि, देवता लोग दुर्वासा मुनि का पूजन किये । संयोगवश उस स्थल के समीप से देवराज इन्द्र एरावत गज के उपर बैठकर जा रहे थे । मुनि दैव संयोग समझ कर अपने गले का हार उतार कर इन्द्र के कल्यार्थ उनके गले में पहना दिये देवराज इन्द्र इस सम्मान को सामान्य समझ कर पुष्प माला को ऐरावत गज के गले में पहना दिये । हाथी पशु स्वभाव गुण के कारण माला को पैरो से कुचल डाला । यह दृश्य देखकर क्रोधित होकर बोले ! हे इन्द्र ! तुम सत्ता के मद में शून्य हो गये हो । त्रिलोकी की संम्पति जलनिधि सागर में डूब जाये । दुर्वासा मुनि के श्राप के कारण पूरा संसार तत्वहीन हो विनाश को प्राप्त हो गया ।

इसके बाद पुनः वर्तमान श्वेतवाराह कल्प के वैवत्स मन्वतंर में प्रजापति ब्रह्मा के हृदय में से धर्मप्रगट हुए । और पुनः दक्षपुत्री जो आदि काल में सुवर्णा नदी-देव नदी कही जाती थी । उनके साथ लग्न करके प्रथम सत्युग काल में साबरमती नदी के किनारे धर्मारण्य क्षेत्र में (जो आजकल नारायणघाट के रुप में जानते हैं) जगत कल्याण के लिये धर्मदेव देवताओ के बारह वर्ष तक फाल्गुन सुदी पूर्णिमा के चौथे प्रहर में धर्मदेव -मूर्ति देवी के नेत्रो द्वारा नरनारायण युगल स्वरुप सोलहवर्षी किशोर अवस्था वाले रुप में प्रगट हुए । माता-पिता पुत्र को देखकर अति खुश हुए ।

भगवान नरनारायण का (प्रादुर्भाव स्थळ) जन्म स्थान नारायणघाट के नाम से प्रसिद्ध है । (वर्तमान में अपना श्री स्वामिनारायण मंदिर स्तित है ।) बच्चो का यज्ञोपवीत बड़े उत्सव के साथ किये । आकाश में देवोने इनके माता-पिता तथा पमरात्मा की स्तुति किये । श्री नरनारायण भगवानने माता-पिता से पूछआ कि हम आपको खुश करने का क्या कार्य करे । तभी माता-पिताने कहा हे पुत्रो हमे तपस्या प्रिय लगती है । तुम भरतखंड की प्रजा के कल्याण हेतु हिमालय में जाकर तपस्या करो । पिता की आज्ञा लेकर श्री नरनारायण भगवान बद्रीवन में गये । एक छोटी सी कुटीया बनाकर दोनो भाई भरतखंड की प्रजा के लिये तीव्र तपस्या करने लगे ।

इसके बाद माता-पिता हिमालय बद्रीनाथ जाने वाले मार्ग अलकनंदा देवनदी के संगम पर स्थित देवप्रयाग के पास रहे तथा बद्रिधाम में भी आज के समय में तपस्या कर रहेहै ।

एकबार बद्रीधाम में अठ्ठासी हजार ऋषि मुनियो की सभा हुई । उसमें धर्म मूर्ति हरि इच्छा से आये थे । वहाँ पर हरि प्रेरित दुर्वासा ऋषि का भी आगमन हुआ था । उस समय भी उनका आदर सत्कार न होने पर समस्त सभा को श्राप दे दिये थे ।

दुर्वासा के श्राप से धर्मदेव का जन्म इटार गाँव में और मूर्ति देवी का जन्म छपैया गाँव में हुआ था । इसके बाद धर्म भक्ति का विवाह हुआ । उनके द्वारा पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान स्वामिनारायण प्रगट हुए थे ।

बद्रीवन के सेवक उद्धवजी साक्षात गुरु रामानंद स्वामी के रुप में अयोध्या में प्रगट हुए ।

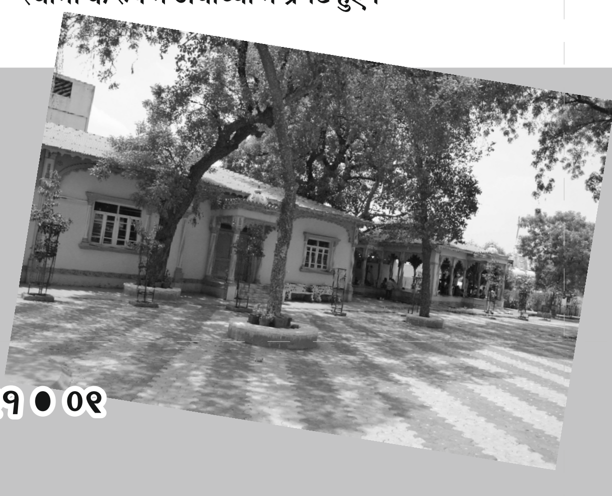

पर्व के साथ साथ

- अतुल पोथीवाला (अहमदाबाद)

२७ फरवरी २०२२ से ५ मार्च २०२२ इस साप्ताहिक दिनो के बीच मनाया जाने वाला अपना ''पर्व'' सच्चे अर्थ में पर्व बनाना है।

मंदिर में जिस दिन प्राण प्रतिष्ठा की गई हो उस दिन को मंदिर का पाटोत्सव दिन कहा जाता है। पाट + उत्सव - पाट अर्थात् प्रस्थापन। विश्व का सर्व प्रथम ऐसा श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर की अपनी विशेषता है। इस के गर्भ गृह में साक्षात् बद्रीपति श्री नरनारायण भगवान विराजे है। इस दिव्य अलौकिक मूर्ति में प्राण डालने वाले तथा प्रतिमा स्थापित करने वाले कोई दूसरा नही बल्कि साक्षात् सर्वावतारी श्रीहरि स्यवं है।

"सुंदर मास सोयामणी, फागण सुदी तृतीया तिथि ते
दिने स्थापनक युं, वालो आव्या विशाल वन थी ॥
विकट अद्रि, बद्री आडा, जई न शके त्यां कोई
अति अगम ते सुगम थया, हरिजय नां हेतु जोई ॥

(भक्तचिंतामणी प्र.-८६)

गुजरात की भूमि पर और उसमें अहमदाबाद के भक्तजनो का कैसा लगाव होगा कि अति अगम भी इतने सुगम हो गये। हम लोगो की भाग्य की सीमा का कोई पार ही नही है।

कोरोना के विषम काल में भले ही मंदिर बंद हो। लेकिन श्री नरनारायण भगवान का प्रतिदिन श्रृंगार का **Live** दर्शन आप सभी को चैनल के माध्मय से प्राप्त हुआ होगा। सभी भक्त दर्शन करके धन्य होते है।

पर्व महोत्सव के अन्तर्गत श्री कालुपुर मंदिर की **Official** चैनल पर प्रतिदिन कथा का रसपान कराया जाता है। **(Youtube channel Link)**

''पर्व नित्य सत्संग कथा'' के अन्तर्गत श्रीमद् सत्संगिभूषण की पवित्र कथा प्रतिदिन एक घंटा चैनल पर **Live** प्रसाहित किया जाता है। यु-ट्युब चैनेल। सम्प्रदाय के ज्ञानी ऐसे सद्‌गुरु शास्त्री स्वामी क्रमशः कथा का दिव्य पान कराते है।

''पर्व नित्य सत्संग कथा'' की एक विशेषता है कि ''श्री स्वामिनारायण'' भगवान की जय श्री नरनारायण भगवान की जय बोलकर तुरंत कथा प्रारम्भ कर दी जाती है। पूरे समय श्रीहरि के दिव्य चरित्र का रसपान कराया जाता है। कोई ईघर-उधर की बात भी नही की जाती यहाँ पर कोई सुफीयाना सलाह नही। केवल श्रीहरि पवित्र का गुणगान किया जाता है। कथा की समाप्ति पर अक्षरी महामंत्र श्री स्वामिनारायण से गूज उठता है। अन्ततः ''श्री नरनारायणदेव पाहीमाम'' अष्टक की सुमधुर सुर के साथ श्री स्वामिनारायण और श्री नरनारायण भगवान के मंदिर और मूर्ति की झलक दिखाते है।

श्री नरनारायण भगवान के मुखारविंद का समीप से दर्शन का लाभ मिलता है।

काली मनोहारी श्री नारायण भगवान की मनोहर मूर्ति के मुखारविंद का दर्शन करते है तो तब लगता है कि करोडो श्री कृष्ण माधुर्य क्षण भर के लिये भूल जाते है। ऐसा इनका सौन्दर्य है।

दीर्धदर्शिता रखने वाले वर्तमान के आचार्य श्री प.पू.श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कौशल्य की अनुभूति पर्व प्रतिदिन सत्संग कथा सुनकर अनुभव होता है।

कोरोना के विषम काल में हम सब भले ही घर पर हो। प्रतिदिन मंदिर नही जा सकते है। लेकिन 'अपने मालिक' ऐसे श्री नरनारायण महाप्रभु प्रतिदिन सामने आकार चैनेल की माध्यम से दर्शन देते है। इससे अधिक भाग्यशाली कौन होगा।

क्योकि !

बड़े मुनि के ध्यान में नही आने पर, वह कभी आँगन में आजाता है।

अहमदाबाद शहर के समीप
श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रसादी के गाँव
कुंडाल

संकलन : प्रफुल खरसाणी

श्री स्वामिनारायण भगवान अपने भक्तो का मनोरथ पूर्ण करने के लिये । और मुमुक्षुओ के कल्याण हेतु सम्पूर्ण गुजरात का भ्रमण किये थे । अहमदाबाद में मंदिर की प्रतिष्ठा के आस-पास छोटे गाँव में नीचले स्तर पर रहने वाले के लिये कल्याण अर्थ विचरण किये थे । उसमें से एक गाँव मेहसाना जिले के कडी तालुका में कुंडाल गाँव है।

यहाँ पर मंदिर है । मंदिरका प्रवेश द्वार पूरब मुखी है । यहाँ पर घनश्याम महाराज की मूर्ति स्थापित है । यहाँ पर श्रीहरि पाँच बार गये थे । यहाँ के कला भक्त का घर प्रसादी का घर है । कला भक्तने घर श्रीहरि पाँच दिन विराम किये थे । वहाँ पर छत्री है । वहाँ पर श्रीहरि भोजन किये थे । यहाँ पर कला भक्त की वाडी तथा कूँवा प्रसादी का है । इस गाँव में सम्प्रदाय अधिक मानने वाला है । कला भक्त अपना खेत-न्याय से प्राप्त करने के लिये । जलते लोहे के गोले को हाथ से उठाये थे । (यह वर्तमान में स्वामिनारायण म्यूजियम में रखा गया है ।)

कुंडाल में श्रीहरि:

इस गाँव की पवित्र भूमि पर श्रीहरि का आगमन की बार हुआ है । इस गाँव की रमणीयता देखकर श्रीहरि संतो के साथ बार-बार इस गाँव में आते थे ।

एकबार श्रीहरि मुक्तानदं स्वामी, ब्रह्मांद स्वामी, नित्यानदं स्वामी, मुकुन्दवर्णी आदि मुनि मंडल सहित तथा काठी घुडसवारो के साथ राजपुर गाँव में टहलते हुए कुंडाल गाँव में आये थे । कुंडाल गाँव की सुदंरता अच्छी है । वृक्षो के समूह शोभा बढा देते है । अपने गाँव में श्रीहरि का आगमन सुनकर श्रीहरि के दृढ आश्रय वाले भक्त श्री कला भक्त तथा मोतीराम भक्त तथा अंबाईदास और नंदराम नामक के ब्राह्मण भक्त, चंदन, कुमकुम, अक्षत और पुष्पहार सहित बाजे-गाजे के साथ श्रीहरि के पास आये । श्रीहरि का सम्मान किये । पूजा किये तथा दण्डवत प्रणाम करके श्रीहरि का समैया किये थे । तथा गाँव में लाये थे । समैया किये श्रीहरि कला के घर आये थे । श्रीहरिमें दृढ विश्वास था । कला भक्त श्रीहरि को सुंदर सुशोभित आसन के उपर बैठाकर कुम-कुम अक्षत आदि द्वारा सवारो को योग्य निवास स्थान दिय थे । इस प्रकार भक्तवत्सल भगवान श्रीहरि कला भक्त के मनोरथ को पूरा करने के लिये । पाँच दिन तक लगातार रुके थे । पाँच दिन कला भक्त के घर रहकर महाप्रभुने सभी को ज्ञान का उपदेश दिये थे । सभी का मनोरथ पूर्ण करके वहाँ से कड़ी नगर के सरोवर के पास आये थे ।

कुंडाल के कला भक्त की श्रीहरिने रक्षा किये :

इस कुंडाल गाँव के वैश्य जाति के श्रीहरि एकान्तिक कला नाम के भक्त रहते थे । अपने धर्म के प्रति निष्ठावान, शूरवीर, सत्संग में भाग लेने वाला साधु सेवा पारायण, धैर्यवाले तता सदैव श्रीहरि के आज्ञा का पालन करने वाले । ऐसे कलाभक्त ''श्री स्वामिनारायण भगवान, काल, माया

अहमदाबाद से कुंडाल जाने के लिये :

अहमदाबाद से राजपुर-कडी जाने वाली एस.टी.बस में बाय रोड १ घंटा १५ मिनिट, अहमदाबाद एअर पोर्ट से १ घंटा

इत्यादि के नियंता प्रत्यक्ष भगवान है। ऐसा सभी लोग कहते है। हे महानुभावो ! असुर अंश वाले गुरु के द्वारा भ्रमित और मत रुपी रस्सी से बंधे उसमें मर्यादा से क्यो रहते हो ? इन मतो का पालन करने से संसार से मुक्ति नही मिलती है। इस कारण से महानुभावो ! मुक्ति प्राप्त करने के लिये पवित्र सत्संग करे । और प्रत्यक्ष श्री स्वामिनारायण भगवान का आश्रय लेकर उनका भजन करे। इससे आप को इच्छित सुख प्राप्त होगा। इस प्रकार से वह भक्त शौर्य वाली बात करके की लोगो को श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रति दृढ आश्रय करवाते थे। उनके द्वारा कही गई कहानी सुनकर मत्सरवाला, असुरभाव वाले उसके भाई बन्धु जलने लगे। इस कारण से दुष्ट लोग उस भक्त को सत्संग में से भ्रष्ट करने के लिये। उसका खेत अन्याय पूर्वक हृदय लिये। तथा उसे बिरादर से अलग कर दिया था। इस प्रकार असुर लोग बार-बार कष्ट देते थे। लेकिन जिसे ''राम राखे तेने कोण चाखे'' इस कहवात के तरह भक्त को प्रहलाद की तरह श्रीहरि की भक्ति में से विचलित नही हुआ । भक्तजी दुष्टो के द्वारा हस्तगत भूमि को वापस लेने के लिये। राजा के पास गया। वह भक्तराज राजा से कहा - हे भूपति ! मेरे गाँव में रहने वाले ये लोग मेरा खेत अन्याय से कब्जा कर लिये है। राजा ने मंत्री से पूछा कि हे मंत्री ! खेत किसका है ? लेकिन दुष्टो की तरफ से मंत्री घूस लेकर बोला। यह खेत मेरा ही है। इसके बाद राजा कला भक्त से बोले कि यदि यह खेत आप का है तो आप को अग्नि से तपे लोहे के गोले को हाथ में रखना पडेगा । हाथ में रखकर बीस कदम चलकर अपना खेत वापस ले लो। यह बात सुनकर अमात्य तथा कला भक्तने कही सबसे अच्छी बात है । राजा अपने कर्मचारियो के साथ उस गाँव में गये । वहाँ पर उसके दुष्मन मंत्रियो के साथ कला भक्त को साथ लेकर खेत पर आ गये।

बाद में ये पापी लोग, लोहे का गोला आग से अत्यंधिक लाल करके कला भक्त से बोले हे भक्त ! यदि यह खेत आप का है तो यह गोला हाथ में लेकर बीस कदम खेत में चलो। यदि आप जलते नहीं है तो यह खेत आप का होगा । सिके बाद धैर्यवान कला भक्त ''बहुत अच्छा'' कहकर अपने आराध्यदेव श्री स्वामिनारायण भगवान को याद किया। श्रीहरि उस समय भक्त को दर्शन दिये। और श्रीहरिने कहा - हे भक्त ! तुम डरना नही। मैं तुम्हारे साथ हूँ। यह गर्म गोला तुम पकड लो । तुम्हारे दोनो हाथ की अग्नि जलायेगी नही। जिस प्रकार से श्रीहरि ने भक्त को बताया। वह उसी प्रकार गर्म लोहे के गेंद को लेकर बीस कदम चला। भक्त का हाथ नही जला। यह दृश्य देखकर सभी लोग आश्चर्यचकित हो गये । राजा के अमात्य संतुष्ट होने के पश्चात बोले यह खेत भगत का ही है। यही सत्य है। स्वयं श्री स्वामिनारायण भगवान सत्य है। यह हमें आज ज्ञात हुआ है। इसके बाद राजा के अमात्योने प्रेम पूर्वक मूल्यवान भेट दिये थे। इस प्रकार अपने आश्रित भक्तो का दुःख दूर करने के लिये । इश्वरश श्री स्वामिनारायण भगवान अपने एकान्तिक भक्त की रक्षा करके अर्न्तध्यान हो गये।

कुंडाल के भक्तो की नामावलि स.गु. निष्कुलानंद स्वामी ने ''भक्त चिंतामणी'' ग्रन्थ के पाठ ४९ में निम्नरुप से रखे है।

कणबी भक्त कलो पुंजाभाई,
भक्त केवल ने रुपाबाई ॥८१॥
अहादि भक्तजन दयाल,
भजे हरि रहे गाम कुंडाल ॥

उपर लिखित भक्तजनों को श्रीहरिने अधिक खुशी देकर अपने अक्षरधाम का सुख प्रदान किये है। इस आधार पर कुंडाल गाँव की प्रभावशाली भूमि को श्रीहरिने अपने पावन कमलवत चरणो द्वारा तीर्थ समान बना दिये।

आदि आचार्यश्री की अमिदृष्टि से अक्षरधाम !

लेखक : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)

सर्वावतारी सर्वोपरी भगवान श्री स्वामिनारायणने इस पृथ्वी पर आकर सनातनी एकांतिक भागवत धर्म की स्थापना किये थे । मानव स्वरुप में रहकर श्रीहरि प्रेम करने वाले ऐसे श्रेष्ठ एकान्तिक भक्तजनो को अधिक सुख प्रदान किये थे । अधिक प्रेम करके अपने भक्तो के सभी मनोरथ को पूर्ण किये थए। साक्षात् यह न्याय पृथ्वी से जाने के बाद प्रगट होता है । भविष्य के भक्तो के लिये यह अवलम्बन का काम करता है । भक्तजन, निराधार न हो । औत आत्यंतिक कल्याण का मार्ग अखंड चालू रहे। इस शुभ उद्देश्य से गढपुर में रहकर अन्तर्ध्यान होने से पहले श्रीहरिने तीन गूढ संकल्प लिये थे । उसकी पूर्ति के लिये उपासना के लिये महामंदिरो का निर्माण कराना तथा उन मंदिरो में श्री नरनारायण आदि अपने स्वरुप को अपने हाथ से स्थापित करना । भक्ति मार्ग की पुष्टि के लिये मंत्र दीक्षा की अपेक्षा हो इसके लिये सर्व प्रकार से दोष रहित पवित्र धर्मवंश में गुरु (आचार्य) पद की स्थापना करना था । धर्म, भक्ति, ज्ञान और वैराग्य बोध के लिये सत्संगिजीवन आदि शास्त्रो की रचना कराये । शिक्षापत्री स्वहस्त से लिखे थे । हम लोग भाग्यशाली है कि देव, आचार्य और शास्त्र के रुप में सत्संग में सदैव स्थित श्रीहरि हम सब को मिले है।

श्रीहरि के उपरोक्त तीन स्त्ररुप उसमें से आचार्य स्वरुप मात्र मंत्र, दीक्षा या मूर्ति प्रतिष्ठा के लिये ही नही हैं। उस स्वरुप को लेकर श्रीहरि सदैव अपने भक्तो के ध्रम की रक्षा करते है। दर्शन, चरण स्पर्श और अमृतवाणी से दिव्य सुख प्रदान करते है। भगवान की गद्दी पर भगवान जैसा ही विराजमान हो सकता है। या तो श्रीहरि विविध रुप धारण करके विराजमान हो सकते है। लेकिन कोई मानव इस पद पर नही आ सकता है। पंचरात्र आघमन में कहे है कि गुरु के स्थान पर विराजमान मनुष्य है कि कोई जीव है । ऐसी बात बुद्धि में आये तो अपराध है । सम्प्रदाय के प्रमुख लगभग प्रत्येक शास्त्रो में धर्मवंशी आचार्यश्री को श्रीहरि का अपर स्वरुप कहा गया है । स्वामिनारायण संहिता चिंतामणी ८१ में श्रीहरि कहते है कि ''इन आचार्यो की सेवा की सेवा करेगे तो वह हमारी सेवा ही होगी . आज से हम दो स्वरुप में हो रहे है । अयोध्याप्रसादजी और रघुवीरजी और आचार्यो से द्रोह करेगा। वह हमसे द्रोह करेगा। चिंतामणी ९९ में कहते है कि जैसी हमारी पूज करते है । उसी प्रकार अपने दो आचार्यो की पूजा करना । क्योकि इन दोनो को हमने अपने गद्दी पर बैठाया है । उनकी आज्ञा का आप सभी पालन करना । इन दोनो आचार्यो की आज्ञा का उल्लंधन मत करना।

श्रीहरि के ये बचन दोनो गद्दी (अहमदाबाद) और वडताल के आदि आचार्य से परम्परा शुरु करके प्रत्येक आचार्य के लिये है। धर्मवंशी आचार्यश्री हमेशा अपनी शक्ति को छिपाकर व्यवहार करते है। इसके बाद भी श्रीहरि द्वारा स्थापित देव कभी-कभी साक्षात असर का प्रभाव दिखलाते है। उसी प्रकार धर्मवंशी आचार्यश्री द्वारा भी दैवीय जीवात्मा चमत्कार करते रहते है । अहमदाबाद गादी के आदी आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज का प्रभुत्व हमने एकबार पढा है। तब से हमारे जीवन में अविस्मरणीय बना है। जो निम्न लिखित है।

सुसवाव गाँव का एक हरिभक्त डोसाजी नाम का था । डोसोजी का एक परिचित बिन सत्संगी था ।

एकबार जन्माष्टमी को काम कहते थे। वह काम वह साथ रहकर करता था। यह बिन सत्संगी समैया में हजारो संत हरिभक्तो की उपस्थिति देखकर दंग हो गया। आश्चर्य चकित हो गया। बोला कि आप के मेला मे इतने लोग भाग लेते है। डोसाजी बोले ये सभी सत्संगि हमारे भगवान का दर्शन करने आये है। यह लोग मौज-मस्ती करने नही आये है। हमारे भगवान स्वामिनारायण है। वर्तमान समय में उनके स्थान पर हमारे भगवान अयोध्याप्रसादजी महाराज है। मै तुम्हे उनका दर्शन करवाउगा।

जन्माष्टमी के दूसरे दिन डोसाजी उसको लेकर महाराजश्री के पास गये। चरणस्पर्श किये वंदना किये। माला पहनाये, मेवा, मिठाई तथा रुपया की भेट चढाई। इसके बाद वह बोला यह मेरा परिचित है। लेकिन सत्संगी नही है। लेकिन हमारा सभी कार्य करता है। आप इस पर अमि दृष्टि की कृपा करे। परिचित भी दोनो हाथ जोडकर महाराजश्री को प्रणाम किया। तब महाराजश्री डोसाजी से बोले। आप का कार्य करता है। यह उसकी सेवा है। जाने-अनजाने में भी भगवान के भक्त की गई सेवा निष्फल नही होती है। परिचित के मन में महाराजश्री के व्यक्तित्व और अमीदृष्टि बस गई। घर आने पर डोसाजी उससे पूछे कि तुम्हे हमारे महाराजश्री कैसे लगे ? परिचित बोला, बापू मुझे अच्छा-अच्छा बोलने नही आता है। महाराज तो बड़े चक्रवर्ती राजा के तरह लग रहे ते।

इस परिचित की उम्र पूर्ण होने आई ! तब वह बिमार पड गया था। वह अंत में मरण सेज से अपने प्रियजनो से कहा कि मैं मूली में दर्शन करने गया था। अयोध्याप्रसादजी महाराज बड़े राजाशाही रथ पर मुझे लेने आये है। मै उनके साथ भगवान के घर जा रहा हूँ। यह कह शरीर छोड दिये थे।

जे जे एने कोई आसरशे रे,
ते तो जरूर भवजल तरशे रे ॥
जकरशे दर्शनने गुण लेशे रे,
वणी पौच्य प्रमाणे कांई देशे रे ॥१७॥
श्रद्धा सहित सेवा करे सोई रे,
वळी राजा थाशे एने जोई रे ॥
एवा जन जे जे जगमांय रे,
तेनी करवी मारे सहाय रे ॥१८॥
मारी ईच्छा चे हमणां एवी रे,
परम प्राप्ति सहुने देवी रे ॥
माटे मोक्षनुं मोटुं द्वार रे,
अमे उघाडियुं छे आ वात रे ॥१९॥
आचारजथी बहु उद्धारशे रे,
जाणो ब्रह्मनगर वास करशे रे ॥
एम श्रीमुखे कह्युंश्रीजीये रे,
जन सौ सत्य मानी लिजीये रे ॥२०॥

(पुरुषोत्तमप्रकाश प्रकार-३७)

वैराग्यमूर्ति स.गु. निष्कुलानंद स्वामी के कलम द्वारा लिख गया। यह वचन स्वयं श्रीहरि के है। आचार्यश्री की महिमा समझने के लिये मात्र यह पंक्ति नही है। यह श्रीहरि के सत्य वचन है। परिचित केवल मात्र आदि आचार्यश्री का दर्शनक यिा और गुण लिया। महाराज को चक्रवर्ती राजा की तह पहचाना इस कारण से उसे अन्तिम समय में महाराजश्री लेने आये थे। वह भी बड़े राजाशाही रथ में लेने आये थे। महाराजश्री की अमी दृष्टि उसके मन में समा गई थी। अंतकाल में श्रीहरि आचार्यरुप में आकार सहायता किये। परिचित बोला भगवान के घर जा रहा हूँ। भगवान घर अर्थात् ब्रह्मनगर अक्षरधाम कहा जाता है।

इस पृथ्वी के उपर अभी कई भगवान और अवतार हुए है। कई धर्मचार्य हुए है। कभी किसीने यह नही कहा है कि भगवान या धर्माचार्य हमें लेने आये है। एक भगवान श्री स्वामिनारा?ण और उनके स्थान पर गद्दी पर स्थित धर्मवंशी आचार्यश्री ही ऐसे हो जो अनंत जीव आत्माओ को अंतकाल में दर्शन देकर अपने धाम में ले जाते है। वह धनघोर कलियुग में !! स्वामिनारायण भगवान अपने भक्तजनो को अंत काल लेने आये हो। यदि इसका संकलन करेगे तो एक शास्त्र हो सकता है। आचार्यश्री लेने आये थे। आश्चर्यजनक बात है। वह भी अपने नजर में तो वह सत्संगि नही था। उसे लेने आये थे। इससे विद्वानो की बुद्धि शायद भ्रमित हो जाये। लेकिन ये सब अभी के इतिहास है। सत्य घटना है। इस प्रसंग पर से धर्मवंशी आचार्यश्री की शक्ति और उदारण को समझ सकते है।

मूली के राजा रामाभाई के पुत्र वखतसिंहजी को अंत काल में पू. महाराजश्री तथा श्रीजी महाराज सुंदर सजावट वालो विमान लेकर अनंत मुक्तो के साथ लेने आये थे । उस समय में गाँव के सत्संगि तथा असत्संगिने दर्शन किया था ।

एक मारवाडी गाडीवान पू. महाराजश्री का २५ वर्ष तक गाडी चलायी थी । उनसे प्रसन्नता प्राप्त किया था । उसका अंतकाल समीप आया तब श्रीजी महाराज ने सर्व प्रथम दर्शन देकर कहे । तुमने हमारी अच्छी सेवा की है । अब तुम्हे अफने धाम का सुख तुम्हें देना है । चार दिन के बाद वह विमार पडा । और देहान्त के समय श्रीजी महाराज और अयोध्याप्रसादजी महाराज दोनो लोग लेनआये थे । दर्शन होते ही उसने शरीर का त्याग कर दिया ।

अहमदाबाद में एक नागर ब्राह्मण बापूजी के समैया में मूली आये थे । उस समय संयोगवश बिमार हो गये । पू. महाराजश्री भूदेव को देखने आये और पूछे कि यही से धाम में जायेगे ? कि अहमदाबाद जाना है । भूदेव चरण स्पर्श करके बोले कि आप हमारे समीप है वही मूली और अहमदाबाद है । सभा में विराजमान महाराजश्रीने श्रीजी महाराजने दर्शन दिये । हम बापूजी को लेने आये है । आप भी हमारे साथ चले । पिता पुत्र बापुजी के पास आये । श्रीजी महाराज उन्हे अपने धाम में छोड आये ।

हलवद के राजा रमणलसिंहजी पू. महाराजश्रीने स्वरुप में दर्श; देक बोले कि आप तैयार रहना है दो दिन के बाद आप को ले जायेगे । दरबार ने मन बना लिया । तीसेर दिन पू. महाराजश्री अपने पिता श्रीजी महाराज के साथ सुंदर श्वेत रथ से आये । और रमणलसिंह को विमान में बैठाकर अपने धाम को ले गये । उपरोक्त चार प्रसंग संक्षिप्त में लिखे गये है । जो आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज नामक ग्रंथ में विस्तार से लिखा गाय है । श्रीहरि कहते है कि हमने अपना देवत्व आचार्यो को दे दिया है । आदि आचार्यश्री में यह गुण तो घणाने देखा ही है वे अधिक दयालु दिल के थे । उनमें उदारता की उदरात भावना और करुणा का समन्वय था । पात्र की पात्तता देखे नही जाति कुजाति नही देखते है । किसी जीव के उपर उनकी दृष्टि पडी बस ! महापुरुषो की कृपा स्वार्थ से प्रेरित नहीं होती है ।

पू. महाराजश्री पहले सबको संज्ञानित करके स्वतन्त्र रुप से धाम में गये थे । इसका प्रसंग देखे तो एक बार बडे भूमानंद स्वामी, पू. महाराजश्री के दर्शन करने गये । और उनसे बोले कि अब मुझे श्रीजी महाराज ले जाये तो सबसे अच्छी बात है । तब महाराजश्रीने कहा ऐसा ही हो । जब जायोगे आपका साथ लेकर जायेगे । बाद में भूमानंद माणसा गाँव चले गये । वहाँ पर श्रीजी महाराज दर्शन देकर कहे ! आज के तीसरे दिन आफ को लेने आऊगा । तीसरे दिन दो बजे श्रीजी महाराज मुक्त मंडल के साथ विमान में बैठकर लेने आ गये । तभी स्वामीजी बोले महाराजश्रीने कहा है कि जब जायेगे तो साथ ही ले जायेगे । श्रीजी महाराज बोले उनको तो अभी पंद्रह दिन की मोहलत है । इस लिये आप चले । यह विमान लाये है । इससे बैठ जाईये । इस प्रकार उन्हे वे ले गये । उस गाँव के कई हरिभक्तोने श्रीजी महाराज का दर्शन किया था ।

उसके पश्चात सात दिन व्यतीत होने के बाद श्रीजी महाराजने आचार्य महाराजश्री को दर्शन देकर बोले आज के सातवे दिन में मैं तुम्हे लेने आऊगा । यह कह कर चले गये । सातवे दिन महाराजश्री अपने पुत्र श्री केशवप्रसादजी महाराज आदि रिश्तेदारो को बुलाकर कहे कि आप लोग हमारा दर्शन कर ले । गाने वाले से बोले कि आप कीर्तन करें । आज रात ग्यारह बजे शरीर को त्याग देना है । दस बजे इतना ही बोले कि श्रीजी महाराज अनंत मुक्तो के साथ रथ और श्वेत हाथी लेकर हमे ले जाने के लिये पधार रहेहै । आप लोग उनका दर्शन करे । मैं महाराज के साथ अक्षरधाम जा रहा हूँ । ऐसा कह कर स्वयं संवत १९२७ फाल्गुन सुद सप्तमी के दिन पंच भौतिक शरीर का त्याग करके अक्षरधाम की तरफ प्रमाण किये थे । उस समय संतो सहित कहई हरिभक्त श्रीजी महाराज का दर्शन किये ।

पैदा हुए वहाँ से अवश्य जाने.....

- प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल (अहमदाबाद)

अति दयालु रे, स्वभाव छे स्वामीनो,
परदुःखहारी रे, वारी बहु नामीनो,
कोईनो दुःखियो रे, देखी न खमाय,
दया आणी रे, अति आकला थाय..”

इस सृष्टि का सर्जन ब्रह्मा, विष्णु और महेश करते है। उसमें ब्रह्माजी उत्पत्ति करते है। विष्णुजी पालन करते है। और शिवजी विसर्जन करते है। नव निर्माण के लिये विनाश आवश्यक है।

काल श्रीहरि की शक्ति है। भगवान स्वयं किसी को मारते नही है। वह जीव को कर्मानुसार फल देने के लिये बैठ है। इस कारण से उन्हे कर्मफल दाता कहते है।

''कभी किसी प्राणी को दुःखी देख कर अथवा सुनकर तत्काल दया भाव से 'राम राम राम'' बोलना सबका स्वभाव है।'' (वचनामृत परथारो)

ऐसे दयालु मात्र एक स्वामिनारायण भगवान है। इतना ही नही अपने सत्संगी के लिये श्री रामानंद स्वामी के पास से वरदान प्राप्त कर लिये थे।

“वणी हरिजनने होय दुःख रे,
थाय मने ए भोगवे सुख रे.
कृष्ण भक्त जो पूर्वने कर्मे रे,
अन्न वस्त्र पामे परिश्रमे रे.
एनु कष्ट आवे मुंजमाय रे,
रह सुख मां रहे सदाय रे.”

(भ.चि. प्र.-४७)

“फर्या उतारे उतारे नाथ,
कहे सुखिया छो सहुसाथ.
कई जोइये तो मगाई लेजो,
खरचि नोय तो अमने कहजो रे.”

(भ.चि. प्र.-८१)

वैसे तो श्रीजी महाराज तो दयालु है। फिर भी उनके शक्ति रुप कलियुग ने विनाश मचा रखा है। अनेक मनुष्य मृत्यु को प्राप्त हुए है। इस समय श्रीजी महाराज के आँठवे वंशज श्री नरनारायणदेव देश गद्दी के लालजी महाराजश्री और भविष्य के आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी ये सभी समाचार पढ़कर सुनकर अत्यंत करुणा भाव से युक्त होकर श्री नरनारायणदेव के श्री चरणो में शीश झूकाकर प्रार्थना किये है कि हे महाराज ! इन सभी जीवो का आप कल्याण करे। साथ ही साथ हरिभक्तो को सांत्वना देते हुए बोले इस विषम काल में धाम की प्राप्त हुआ हो। उनके सगे सम्बधीय समकी जो हरिभक्त है। उनका कल्याण तो होना ही है। शरीर का त्याग किसी भी अवस्या में हो अन्ततः श्रीजी महाराज अवश्य लेने आते है।

“अंतकाले तो अवश्य आवे,
ए बिरुद केदी न बदलावे.
जे कोय स्वामिनारायण होय,
तेने माथे नथी केनो भेय.”

(भ.चि. प्र.-११५)

“एवो सत्संगी कोई न कावे,
जैने तेडवा नाथ न आवे.”

(भ.चि. प्र.-१५७)

वचनामृत में श्रीजी महाराज के वचन है कि भगवान का भक्त, किसी भी प्रकार से शरीर का त्याग करे, जल जाये। या शेर खा जाये। वह धाम में ही जाता है। और विधर्मी चंदन की लडकी से जलाया जाय तो भी उसका कल्याण नही होता है। भक्त को भगवान का अखंड स्मरण और खोज रहे। उसके लिये भगवान कभी आकर काल को आदेश करते है। हमें श्रीजी महाराज को स्मरण रखना है। हमें महाराजने कुशल और सुरक्षित रखे हैं।

यह आवश्यक नही है कि सभी पापी मर गये हो ! केवल पुण्यशाली बचे हो । यह मूर्खता पूर्ण समझदारी है ।जीवन अकाल मृत्यु जैसा कुछ नही है। सब कुछ निश्चित समय पर ही होता है । केवल हमारी सोच गलत है । हम लोग भ्रम में रहकर यह मानते है कि अधिक दवा के सेवन से, विटामिन खाने से, धन-सम्पती होने से, भौतिक सुख-सुविधा होने से हम ८०-९० वर्ष तक जीवित रहेगे । हमारे हाथ जन्म-मरण निर्धारित करने की क्षमता ही नहीं है। यह कार्य मात्र परमात्मा का है। यह अवश्य रुप से समझे ।

जन्मया त्यांथी जरुर जाणो, मरवानु छे माथेजी,
आव्या त्यारे श लाव्या ने, शुं ली जवुं साथेजी."

जिस दिन हमारा जन्म होता है। उसी समय अपने अंत का समय, जगह, कारण निश्चित हो जाता है। उसमें से भगवान तथा उनके सानिध्य वाला बडाव्यक्ति भई कोई परिवर्तन नही कर सकता है । डॉक्टर को लाखो रुपया देने के बाद समय के पश्चात वह एक श्वास कजया बिक्री में नही दे सकता है। कुछ सीमा के पश्चात दवाये भी काम करना बंद कर देती है। लेकिन आर्तनाद से की गई प्रार्थना अवश्य कार्य करती है।

सत्संग के इतिहास में श्रीहरिने ब्रह्मानंद स्वामी आदि कई संतो-हरिभक्तो ने अपना आयुष्य वृद्धि का उदाहरण प्राप्त होता है। जब काल की प्रधानता होती है। तब श्रीजी महाराज आज्ञा करते है कि दूसरे की रक्षा हो ऐसा करना चाहिए। ऐसी अवस्था में पलायन नही करना चाहिए। मानसिक तनाव और हताशा के शिकार न बने। ये एक अच्छी बात है। श्रीहरि के बचनो को सुनना तथा दृढ विश्वास रखना चाहिए। विना श्रीहरि के मर्जी से एक सूखा पत्ता भी नही उड सकता है। हमे श्रीजी की मर्जी में खुश रहना चाहिए । जो लोग धाममें जा चुके है। उनके शोक में डूबे नही । उनके श्रेय में प्रभु का भजन अधिक करना चाहिए । और यथा शक्ति प्रभु की सेवा करना चाहिए। और जो लोग मृत्यु के पंजे से बचे है। उन्हे अब अपना जीवन प्रभु के लिये अर्पण करके दृढता से धर्म का पालन करना चाहिए । प्रभु का अधिक से अधिक स्मरण करना चाहिए। समझ कर प्रभु भजन में वृद्धि कर दे। महाराज के कृपा को याद करके कृतज्ञ बने। धर्म के बाहर पैर नही रखे। मानव शरीर को नाशवान समझकर इस शरीर का कोई निरधार नही, उसे दृढ करके, व्यवहार कम करके प्रभु का भजन अधिक करे।

इस जीव को भगवान अपने घर बुलाते है। वह हमे अच्छा नही लगता है। इस लिये हमें भगवान को अपने घर बुलाना चाहिए। उनकी कृपा से जीव को एक कील भी नही चुभती है। यह कठिन काल मनुष्य को सुधारता है । और भगवान के सामने रहने की मदद करता है। यह काल नास्तिक को आस्तिक बनाता है । कितना भी बलशाली हो, कोई अमर नहीं है। राम, रावण, दुर्योधन, कर्ण, भीम, हिरण्यकश्यप, कितने शक्तिशाली ते। फिर भी इस शरीर का त्याग करना ही पड़ा था। धनवान हो या निर्धन हो, बाल कहो या वृद्ध हो, दवा के सात या दवाहीन, सभी समान है। काल के समक्ष कोई छोटा-बडा या बलशाली नही होता है । काल कुछ भी नही देखता है । इस लिये इस जीव को किसी तरह का अभिमान नही रखना चाहिए।

प.पू. लालजी महाराजश्रीने इस बात को लिखने के विशेष आज्ञा दिये है। और माथे पर चढाकर आपश्री के दुख, लगाव, भावना की शब्दो में रुपान्तिवित करके अक्षर देह देने का नम्र प्रयास किया हूं। उन के इस सात्वना युक्त वाणी से अनेक मुमुक्षुजीवो के हृदय में शांति प्राप्ति होगी। और प्रभु भजन में मन लगेगा। यह निश्चित है।

"जे जे थाय छे जकत मां, तेनो वीजो नथी करनार,
सुरव-दुःरव आवे सर्वे भेणु, तेमां रारवल्यो स्थिर मति,
जाणवीश मारा जनने, वणी करीश जतन अति,
एम करतां तो पंड पडशे, तो अप्राप्य सुरव छे अति घणुं.

(भ.चि. प्रकरण-७६)

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

कोरोना के समय में हृदयविदारक दृश्य हम सब लोग देख लिये है। अपनो के लिये हास्पिटल में प्रवेश के लिये धक्का खाना। आक्सीजन के लिये जगह-जगह पर चक्कर लगाना, दवा और इन्जेक्शन के लिये लाचारी का अनुभव देखा गया है। लोग घर के बाहर निकलने में धबराते है। अरे ! मंदिर में घंटनाद की जगह एकांत दिखाई देता है।

समाज में आये इस कष्ट दायक परिस्थिति से संज्ञानित प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्रीने अपने म्युजियम में कोविड केन्द्र बनाने का निस्चय किये। तथा उसकी पूर्ति भी किये है। नव डॉक्टरो की टीम, सवासो आक्सीजन कोन्सन्ट्रेतर तथा पाँच वेन्टीलेटर तथा भोजन की सुंदर व्यवस्था वाले वीस बेड वाला यह केन्द्र शुरु किया गया। इसमें पचास बेड तक का लक्ष्य रखा गाय है। म्युजियम के पोझिटीव तरंग में निर्मित यह केन्द्र रोगियो को शीघ्र स्वस्थ होने में सहायक है।

अपने म्युजियम के निर्माण में अल्प अवसर प्राप्त हुआ। और स्वामिनारायण मासिक में प्रतिमास लेख लिखने का अवसर मिला। ऐसे श्री हितन्द्रभाई पटेल भी इस अंक में अंतिम लेख लिखकर कोरोना रोग से प्रभावित होकर अक्षरधाम को प्राप्त हुए है। हमारे मंदिर द्वारा प्रकाशीत ''धर्मवंशी आचार्यपद'' और ''अहमदाबाद में श्रीहरि'' नामक दो पुस्तके लिखे है। उसी प्रकार प.पू. आचार्य महाराज के साथ लगाव रखने वाले वर्तमान में जिन्होने प.पू. महाराजश्री के साथ रहकर ''पर्व'' के लोगो की डिजाइन किये। तथा गुजरात के प्रसिद्ध कलाकरा और कैलिग्राफर श्री अमितभाई खरसाणी भी कोरोना से प्रभावित होर अक्षरधाम को प्राप्त हुए है। जिससे सत्संग की हानि हुई है। लेकिन ईश्वर की ईच्छा को कौन जान सकता है ? भगवान स्वतन्त्र है। इस कारण से जीव की रक्षा तथा जीवन को दीधार्यु की प्रार्थना करना भी ईश्वर को विवस करने का विषय बनता है।

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "स्वयं को पहचाने" "आत्म कल्याण" के प्रयास करते रहे"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

इतने सभा में आने के बाद कैसा लगता है ? भगवान को प्राप्त करना सरल है या कठिन है ? इसके लिये पूर्ण भाव, जहाँ तक हो सके आज्ञा पालन का प्रयत्न करना चाहिए । लगातार 'आत्ममंथन चालू रखे । तो भगावन की सरलता से प्राप्त कर सकते है।

एक राजा के राज्य में मंत्री था । उसकी मृत्यु हो जाने के बाद राजा को ऐसा लगा कि उकी जगह पर एक नया मंत्री नियुक्त करु । जो बुद्धिशाली एवम् हमारी सहायता करने वाला हो । वह इस कार्य के लिये विज्ञापन किये कि जो सबसे अधिक बुद्धिशाली होगा । उसे इस पद पर नियुक्त किया जायेगा । उस परीक्षा के लिये मात्र तीन व्यक्ति आये । उनके लिये एक पहेली की रचना की गई । और एक कमर में ताला लगाकर बंद कर दिया गया । और कहा गया जो इका समाधान करेगा तभी यह ताला खुलेगा । जो व्यक्ति ताला खोलकर बाहर आयेगा । उसी की नियुक्ती की जायेगी । मात्र सुबह तक का समय दिया गया था । उसमें से एक व्यक्ति शांतिपूर्वक सो गया । शेष दो लोग पुरी रात दिमाग लगाते रहे । जीवन के पूरे ज्ञान को लगाकर थक गये । सोय हुए व्यक्ति से बोले आप क्यो सो रहे है ? वह व्यक्ति बोला आप अपना काम करो । मुझे अपना कार्य करने दो कहकर पुन: सो गया । प्रात: उठकर ताला खोलकर बाहर निकल गया । उसे उस बात का ज्ञान ही नही रहा । वास्तविकता क्या थी ? वह ताला बंद ही नही था । वह खुला ही था । छूने पर तुरंत खुल गया । धक्का मार कर दरवाजा खोलकर बाहर आ गया । इसी प्रकार हमारे जीवन में भी ऐसा हो जाता है। कई बार ऐसा है कि हम परीक्षा के समय पर पढते है। लेकिन प्रातः परीक्षा के समय भूल जाते है । इससे अच्छा तो आराम से सो जाना चाहिए । शांत चित्त होने पर सब याद आ जाता है । कहने का अर्थ यह है कि सबसे पहले प्रश्न को समझना पडता है । प्रश्न स्वंय उत्तर होता है । प्रश्न के अंदर उत्तर छिपा रहता है । हम क्या करते है । मैं कैसे क्या करु ऐसा कर कर दो व्यक्ति की तरह बैठा रहा जाता है । ८०% हम लोग भ्रम में जीते है । मैं अपने में भ्रम है । मैं हूं यह सबसे बड़ा भ्रम है । हम क्या है । उसे जाने वगैर दूसरे की नकल करता है । छोटे बच्चो को भी हम लोग यही सिखाते है । कि उस व्यक्ती की तरह आप को बनना है । बच्चा जन्म लेने के बाद दूसेर तरह की बनने के लिये नही बना है । उसके अंदर की शक्ति का विकास होना चाहिए । हम कहते है कि 'राम' की तरह बनो, बुद्ध जैसा बनो और गांधीजी की तरह बनो जो सम्भव नही है । राम बन सकते है लेकिन कहाँ ? नाटक में राम के पात्र के रुप में राम बन सकता है । वास्तव में नही बन सकता है । हम बनने जायेगे तो हमारी शक्ति भी चली जाती है । 'गुलाब'-जूही की तरह नही हो सकता है । यदि प्रयास करेगे तो अपनी भी सीख चली जाती है । और चंपा भी नही बन सकते है । जो बीज हमारे अंदर है । उसीक ा पोषण करना चाहिए । हम पोषण नही करते है । हम लोग अनुकरण में ही चले जाते है । दूसरे के अच्छे गुणो को अवश्य ग्रहण करे । जिससे जो अच्छा मिले ग्रहण कर लेना चाहिए । उसकी तरह बनने का प्रयास नही करना चाहिए । उसके जैसा वह

अकेले ही होता है । मनुष्य कई बार निराश होकर आत्महत्या कर लेने का विचार कर लेता है । हमने जो सुना है उस आधार पर आत्म हत्या करने वाला व्यक्ति दूसरे सात जन्म उसी प्रक्रिया से गुजरता है । सात जन्म तक दुख भोगने से अच्छे है कि इसी जन्म बचे दुख को भोग लेना चाहिए । आत्महत्या करने के बाद कितना भोगना पडेगा । इसमें अपना अधिक नुकशान होता है । हम लोगो को तो कोई कंठिन दुख भी नही आता है । दुःख तो भगवान को भी मिला था । नंद संतो ने कितना सहन किये है । लोगो को बोलने पर नही जाना चाहिए । नही तो तुरंत खराब लगता है । ठीक है न ! हम लोग तो मनुष्य है पत्थर तो नहीं है । लेकिन पत्थर पर भी प्रभाव पडता है । पत्थर पर यदि पानी बार-बार एक स्थान पर चोट करता है । तो वहाँ भी खाली जगह बन जाती है । पत्थर पर प्रतिदिन हथोडे से प्रहार करने पर पत्थर टूट जाता है । इसके लिये क्या करे ? मायारुपी संसार में तो कष्ट आने वाला ही है । ऐसा मान लेना चाहिए की प्रत्येक व्यक्ति अपने सोच और विचार शक्ति के आधार पर ही बोलेगा । यह सोचकर मन पर नही लेना चाहिए । समस्या आने पर भ्रम में नही रहना चाहिए । सबसे बड़ा भ्रम ''मैं कौन हूँ'' ये होता है । हम स्वयं को नही पहचान सकते है । स्वयं आत्म मंथन करना चाहिए । अर्न्तद्रष्टि रखना चाहिए । क्या नही चाहिए । यह सर्व प्रथम ज्ञात होना चाहिए । इस प्रकार अच्छी वस्तु को ग्रहण करने की शक्ति नही रहजाती है । हमारे अंदर कमजोरी होगी । तो उसे पचा नही सकते है । इस लिये अंदर के रोग को सर्वप्रथम दूर करना चाहिए । शिक्षापत्री सुगम शास्त्र है । इसे समझ लेगे तो दूसरे शास्त्रो की आवश्यकता नही पडेगी । हमे महाराज के आज्ञा का पालन करना चाहिए । यदि दुःख आयेगा तो हम उससे बाहर निकल सकते है । भगवान के अलावा १००% पूर्ण कोई भी नही है । प्रत्येक में कुछ न कुछ त्रुटि होती ही है । भगवान से प्रार्थना करना चाहिए । भगवान इतनेद यालु है कि वे अवश्य कृपा करेगे । प्रारब्ध को बदल देते है । लेकिन उनके लिये अपना अन्तःकरण शुद्ध होना चाहिए । यदी हमें १००% आनंद चाहिए । बिलकुल दुःख नही चाहिए । सम्पूर्ण दुख से मुक्ति पाने के लिये स्थायी सुख प्राप्त करने के लिये हमे १००% समर्पण करना चाहिए । हमे १०% भी भगवान को नही देते है । लेकिन भगवान १००% हमे दे देते है । हमारी क्या गलती है । उसे सुधार लेना चाहिए । दुःख से धबराना नही चाहिए । प्रारब्ध के अनुसार दुख भोगना पडता है । भगवान इतने दयालु है कि अंतकरण शुद्ध रखकर याद करने पर सेकन्ड में दुख दूर हो जाता है । हाथ पकड कर रास्ता बदल देते है । अर्थात् १००% शरणागति रखे ।

SHREE SWAMINARAYAN TEMPLE - KALUPUR

BANK DETAILS FOR ONLINE / CHEQUE DONATION PURPOSE

STATE BANK OF INDIA
NAVRANGPURA BRANCH, AHMEDABAD
BENEFICIARY NAME - SHREE SWAMI NARAYAN MANDIR TRUST
A/C. NO. 62303101798
IFSC : SBIN0003096
MICR CODE : 380 002 029

INDIAN BANK
G S HIGH WAY BRANCH, AHMEDABAD
BENEFICIARY NAME - SHREE SWAMI NARAYAN MANDIR TRUST
A/C. NO. 50379847476
IFSC : IDIB000G523
MICR CODE : 380 019 038

BANK OF INDIA
RELIEF ROAD BRANCH, AHMEDABAD
BENEFICIARY NAME - SHREE SWAMI NARAYAN MANDIR TRUST
A/C. NO. 201310100027259
IFSC : BKID0002013
MICR CODE : 380 013 027

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ गांधीनगर

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा और आशीर्वाद से उसी प्रकार भविष्य के आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के नेतृत्व में २०० वर्ष का पर्व (श्री नरनारायणदेव द्विशताब्दी महोत्सव) महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ गांधीनगर द्वारा वर्ष के बीच निम्नलिखित रुप से मनाया जायेगा।

कथा-वार्ता-सभाये :- गांधीनगर के आस-पास के क्षेत्र तथा गाँवो में कथा-वार्ता सभी की जायेगी।

पदयात्रा :- श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ गांधीगनर से कालुपुर मंदिर तक।

श्री नरनारायणदेव अष्टक :- प्रतिदिन मंगला आरती के पश्चात श्री नरनारायणदेव अष्टक का पाठ करना।

मंत्र लेखन :- श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर द्वारा प्रकाशित महामंत्र लेखन के लिये बुक का वितरण हरिभक्तो के लिये किया गया। लेखन के पश्चात बुक कालुपुर मंदिर में जमा करने को कहा गया।

जरुरतमंद लोगो की सहायता :- गांधीनगर के क्षेत्र में जरुरतमंत लोगो की सहायता की गई।

वृक्षारोपण :- गांधीनगर के आस-पास के क्षेत्र में वृक्षारोपण किया गया।

स्वच्छता अभियान :- गांधीनगर के आस-पास के क्षेत्रो में सफाई अभियान किया गया था।

खेल-कूद :- सत्संग परिवार द्वारा खेल-कूद का आयोजन किया गया।

प्रभात फेरी :- गांधीनगर के आस-पास के क्षेत्रो में प्रभात फेरी निकाली गई थी।

श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ गांधीनगर संचालित श्री स्वामिनारायण कोविड केर सेन्टर (निःशुल्क)

वर्तमान समय में धर्म और सम्प्रदाय मात्र आध्यात्मिकता और धार्मिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार तक सीमित नही है। आवश्यकता पडने पर प्राकृतिक विपत्ति के समय सरकरा और लोगो के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कई प्रकार की सहायता करने के लिये श्री स्वामिनारायण भगवान की आज्ञा का पालन करके लोगो ने मंदिर में दान दिये थे। लोग अपना कर्म करना जानते है। इसमें स्वामिनारायण सम्प्रदाय हमेशा अग्रसर रहता है।

श्री स्वामिनारायण मंदरि सेक्टर-२ गांधीनगर द्वारा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादीज महाराजश्री के आज्ञा से तथा महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन में ५० बेड का कोविड केर सेन्टर ता. ३-५-२०२१ के दिन खोला गया। जिस में ७० जितने रोगी पोझीटिव में से नेगेटिव होकर घर गये। अभी १५ लोग की देखरेख की जा रही है। कोविड केर सेन्टर में प्रतिदिन सुबह शाम सम्प्रदाय के अनुसार आरती धुन की जाती थी। योगासन करवाया जाता है। प्रातः काल, १० बजे नींबू पानी, ११-३० पर भोजन और शायं ४ बजे फल, ७-३० पर भोजन तथा हल्दी वाला दूध दिया जाता है। साथ ही साथ हरप्रकार की दवा आक्सीजन विना मूल्य का दिया गया।

प.पू.ध.धु. आचार्य महारजाश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद प्रेरणा से अपने कई मंदिरो में सिर्फ महामारी की सहायता हेतु सहायता की प्रवृत्ति चल रही है। (स्वामी देवप्रकाशदासजी)

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

तिथी	रसोई देनेवाले	गाँव
चैत्र सुद-३	शांतिभाई नानजीभाी (चुरमा के लड्डू)	कल्याणपुरा
चैत्र सुद-३	भावसार शैलेषभाई (मोहनथाल)	अहमदाबाद
चैत्र सुद-५	पटेल सुनिलभाई बाबुभाई (मालपूवा)	राजपुरवाला
चैत्र सुद-८	अ.नि. हालाई सुशीला अनिलभाई (मगस)	कोडकी-कच्छ
चैत्र सुद-९	माधवजी शामजी बुधवा (ड्रायफ्रुट हलवा)	
चैत्र सुद-९	अ.नि. मगनभाई नानजीभाई गोलविया (मैसुब)	वडोदरा
चैत्र सुद-९	भावसार शैलेषभाई (फराल)	अहमदाबाद
चैत्र सुद-१०	अ.नि. कमलीबा के. पटेल केशवलाल मगनलाल पटेल (चुरमा के लड्डु)	बाकरोल
चैत्र सुद-१०	खेताणी मनजीभाी रवजीभाई (चुरमा के लड्डू)	सुखपर-कच्छ
चैत्र सुद-१०	अ.नि. कुबेरभाी मणीलाल पटेल (मगस)	रुपाल
चैत्र सुद-१०	पटेल हिमांशुभाई करशनभाई (बासुंदी पूरी)	बापुनगर
चैत्र सुद-चैत्र सुद-११	पटेल पंकजभाई शामलभाई (ड्रायफ्रुट हलवा)	झूंडाल
चैत्र सुद-११	भावसार शैलेषभाई, माणेकला विठ्ठललाल भावसार (फराल)	अहमदाबाद
चैत्र सुद-१२	अ.नि. कुरजीभाई कानजीभाई भूवा परिवार (मोहनथाल)	सुखपर-कच्छ
चैत्र सुद-१२	यशिका नीलकंठ महाराज (मोहनथाल)	जलगाँव
चैत्र सुद-१२	प्रवीणभाई नसित (श्रीहरि इन्फ्रास्ट्रकचर) (मोहनथाल)	अहमदाबाद
चैत्र सुद-१३	चंदाराणा निर्भय जयसिंह (मोहनथाल)	अहमदाबाद
चैत्र सुद-१५/१	अ.नि. कुंवरजी प्रेमजी वेकरिया (मोतैया लड्डु)	अहमदाबाद
चैत्र वद-३	अ.नि. रणछोडभाई डाह्याभाई पटेल (बूंदी के लड्डू)	आंतरोली
चैत्र वद-४	पांचाणी भावनाबेन रसिकभाई (मोहनथाल)	अहमदाबाद
चैत्र वद-४	अ.नि. नंदुभाई गांडाभाई पटेल (मगस)	झूंडाल
चैत्र वद-६	भावसार देवांश चिंतनभाई (बूंदी के लड्डू)	अहमदाबाद
चैत्र वद-६	पटेल हितेषभाई रतीभाई (मोहनथाल)	अहमदाबाद
चैत्र वद-६	अ.नि. कैलाशबेन नवीनभाई सोनी (चुरमा के लड्डु)	अहमदाबाद
चैत्र वद-७	अ.नि. ठक्कर योगेशभाई रतीलाल (चुरमा के लड्डू)	अहमदाबाद
चैत्र वद-७	अ.नि. पटेल भानुबेन भीखाभाई (मोती लड्डु)	लसुन्द्रा
चैत्र वद-८	अ.नि. कोठारी नानजी भगत गुरु आत्माराम भगत (साटा जलेबी)	झूंडाल
चैत्र वद-८	सोनी कंचनबेन बाबुलाल (मोहनथाल)	अहमदाबाद
चैत्र वद-८	अ.नि. पटेल पोपटलाल मरघाभाई (मोहनथाल)	पोर
चैत्र वद-९	जयेशभाई विनुभाई तथा अळकाबेन जयेशभाई (चूरमा ले लड्डू)	
चैत्र वद-९	अ.नि. मावजी करशन हालाई (मगस)	कोडाई-कच्छ
चैत्र वद-१०	चौधरी बलदेवभाई नरसंगभाई गलबाभाई (मगस)	माणेकपुर
चैत्र वद-११	भावसार शैलेषभाई (हरिँ परिवार) (फराल)	सरसपुर
चैत्र वद-१२	अ.नि. अरविंदभाई विठ्ठलदास पटेल (बूंदी के लड्डू)	कल्याणपुरा
चैत्र वद-१२	पटेल भारतीबेन नरेशभाई (चुरमा के लड्डु)	कल्याणपुरा
चैत्र वद-१२	पटेल भारतीबेन नरेशभाई (चुरमा के लड्डू)	निकोल
चैत्र वद-१२	पटेल मंजुलाबेन जगदीशभाई (मगस)	ओला-कलोल
चैत्र वद-१२	अ.नि. मिस्त्री कार्तिक बलदेवभाई (मोहनथाल)	सरढव
चैत्र वद-१२	अ.नि. गौरीबेन कांतिलाल पटेल (मोहनथाल)	थोडमपुर
चैत्र वद-१२	पटेल जगदीशभाई चिमनलाल (मोहनथाल)	गांधीनगर
चैत्र वद-१४	अ.नि. जयाबेन नरसीभाई पटेल (मगस)	अहमदाबाद
चैत्र वद-१४	अ.नि. शारदाबेन कोदरभाई पटेल (मगस)	मेमनगर
चैत्र वद-१४	अ.नि. पटेल वालीबेन गंगारामभाई (मगस)	मेमनगर
चैत्र वद-३०	पटेल आरना कुनलकुमार (बूंदी के लड्डू)	धमासणा

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

श्री स्वामिनारायण मंदिर, सेक्टर-२
गांधीनगर में कोविड सेन्टर

श्री स्वामिनारायण मंदिर, नारणपुरा द्वारा
कोरोना के गरीब के लिये निःशुल्क टिफिन सेवा

श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद
प.पू.ध.धु. आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री और
प.पू. लालजी श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से और
अ.सौ. पू. गादीवालाश्री तथा पू. श्रीराजा के नेतृत्व में संचालित
सम्प्रदाय की मानवतापूर्ण विचारधारा के भाग रुप में
ता. १८-०२-२०१८ से सेवा देनेवाली "आंगन" संस्था
कोरोना महामारी में अपने माता-पिता के साथ छूट जाने से
१ से १८ वर्ष की लडकियों को स्वीकार करेगी ।
प्रवेश मर्यादित है लेकिन यह निःशुल्क रहेगा ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर द्वारा एक पहल....
स्थल: श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१
सम्पर्क : रुपम : ९८२५६७९५०० ● हीरल : ९८७९९२२६५५

विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में विराजमान

श्री नरनारायण भगवान का २०० वर्ष

पर्व

२७ फरवरी से ५ मार्च २०२२

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 * Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2021-2023 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2023

श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय के देश-विदेश के हरिभक्तो के आग्रह पर उनकी सुविधा के लिये आनलाईन डोनेशन कालुपुर मंदिर की आफिसियल वेबसाइट पर नीचे दिये लिंक द्वारा कर सकते है।

http://www.swaminarayan.in/donation

Praful Kharsani